

क्षण भर का मिना ना आराम
 उमरिया ^{ssss} बीत चली
 तूने जया नहीं, मं० का नाम
 गगरिया ^{sss} रीत चली

भटक-भटक चौंरासी योनि
 मानव तन को पाया
 धरती ऊपर जनम मिना लो ^{ssss} ॥२॥
 पीछे पड़ गई माया ॥२॥
 संगे जेहे न तुम्हारे दाम
 गगरिया ^{ssss} रीत -----

जीवन भर की भाग दौड़ में
 रो-रो समय बिताया
 झूठी शान के चक्कर में लो ^{ssss} ॥२॥
 बड़ों का नाम डुबाया ॥२॥
 होगी जीवन की कभी न कभी शाम
 गगरिया ^{ssss} रीत -----

कहो किसी से बात पते की
 पल में गुस्सा आता
 ज्ञान नहीं है तुमको बन्दे sssss ॥2॥
 बाबा sss हैं सह जाता ॥2॥
 दौड़ो बन्दे अभी-झूठ ओर झाम
 बागारिया sss रीत-----

आज लगा इस, मृत्युलोक का
 मानव खुद है मालिक
 ध्यान रखो मेरी दाती तो है sss ॥2॥
 कई लोक संचालक ॥2॥
 धरती माता है मर्कट का नाम
 बागारिया sss रीत-----

बुरे वक्त में फसे मिले थे
 मर्कट ने दुखड़े दूर किये
 आज दौड़ना सिखा दिया तो sss ॥2॥
 मर्कट से हट के दूर हुये ॥2॥
 "श्री बाबा श्री" हट गये खुद ही सरे आम
 बागारिया sss रीत-----